आपातकाल में सृजन फुलवारी

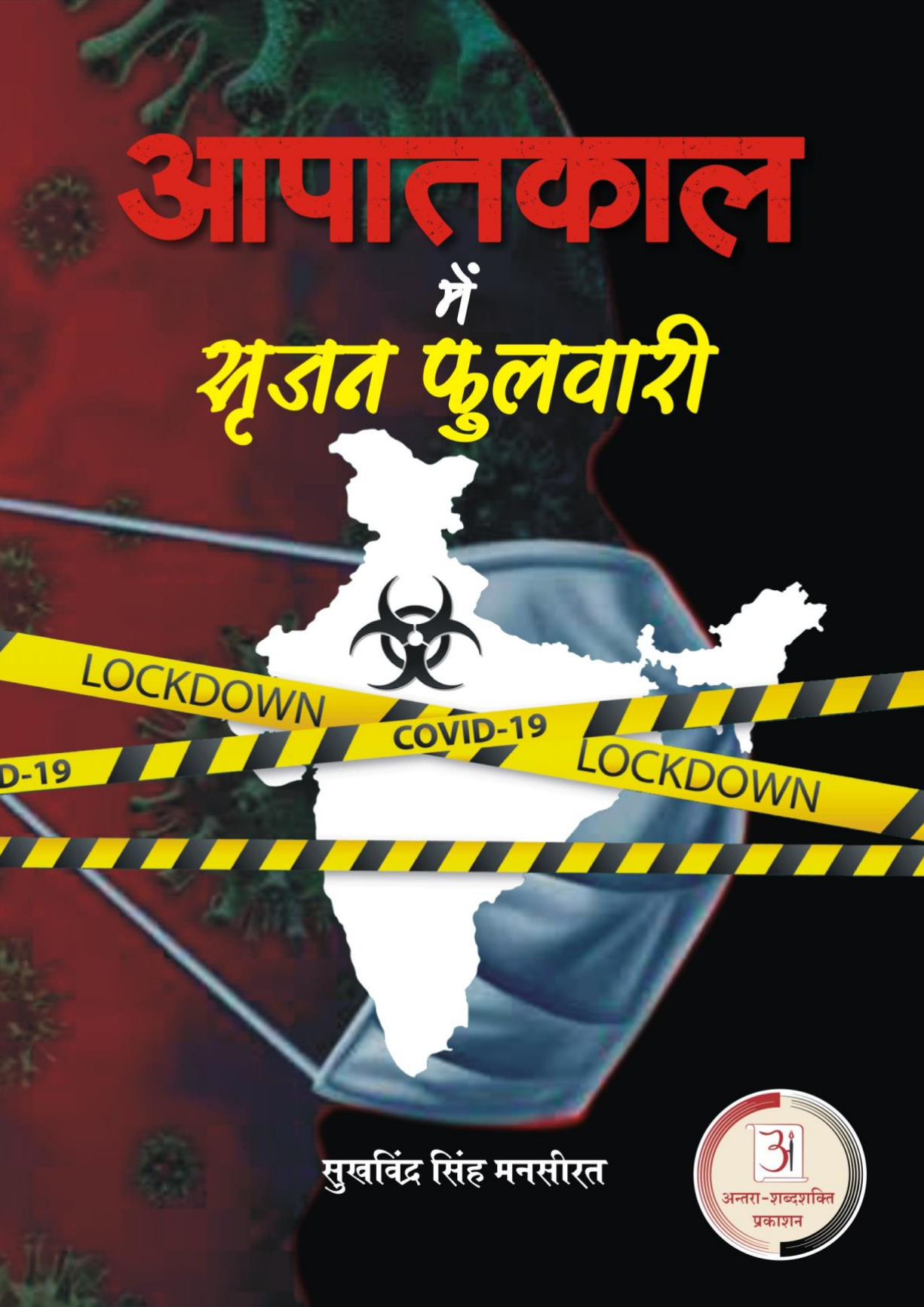

सुखविंद्र सिंह मनसीरत

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सुखविंद्र सिंह मनसीरत

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-163-3

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, सुखविंद्र सिंह मनसीरत

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SUKHVINDRA SINGH MANSEERAT

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	लॉकडाऊन का असर है	6
2.	हाथों में ले कर हाथ चले	7
3.	पक्षी नभ में स्वतंत्र देखे	8
4.	परवाना रूठ गया	9
5.	बदली जीवन रेखा है	10
6.	क्यों रोता है क्षण क्षण	11
7.	आँखें भर आई हैं	12
8.	कोरोना मुक्ति मंत्र	13
9.	कोरोना आया भारत में हैरान हो गया	14
10.	कोरोना जागरूकता अभियान	15
11.	कोरोना वायरस का कहर	16
12.	खुदा की नियामत है	17
13.	याद मेरी उसको आती तो होगी	18
14.	नारी मान सम्मान की भूखी	19
15.	भाईचारा	20
16.	घर-घर में अब विभीषण सारे	21

लॉकडाऊन का असर है

लॉकडाऊन का असर है,
जिन्दगी बन गई लचर है।
हाल बद से बदत्तर हूआ,
प्रकृति रौद्र रूप पहर है।
अस्तव्यस्त जनजीवन है,
थम गया ये गाँव शहर हैं।
नित्यकृत्य भी रुक गए,
हर शख्श बेरोजगार है।
मजदूर मजबूर हो गया,
घर बाहर मौत कहर है।
निज कैद में नजरबंद है,
खाली खाली ये नजर हैं।
कोरोना प्रभाव देखिए,
खुद रहीं यहाँ पर कब्र हैं।
बेइंतहा हो गई हैं बंदिशें,
टूटने लग गया ये सब्र हैं।
फल इंसानी कृत्यों का,
इन्सान हो रहा बेकद्र है।
पापों का घड़ा मर गया,
पापों का ये सब हस्र है।
मोह,लोभ,क्रोध रत था,
निजस्वार्थों का प्रखर है।
धर्म,जाति में संलिप्त था,
निकल रहा अब जहर है।
सुखविंद्र अब समझ जा,
नासमझी की ये कसर है।

हाथों में ले कर हाथ चले

आओ संग संग साथ चले
हाथों में ले कर हाथ चले

सारे संकट छट टल जाए
हमराही बन संग राह चलें

काले बादल भी छंट जाए
हवा बनके संग साथ चलें

मंजिल भी कदमों में होगी
कदम से कदम मिला चले

जिन्दगी बसर हो जाएगी
बनके पूरक हम साथ चलें

फूलों सी महक महकाएंगे
पथ पर चलके साथ खिलें

आशा और विश्वास बना
लहरों को चीरते साथ चलें

सुखविंद्र दृढ संकल्पी बन
जंग जीतते हुए साथ चलें!

पक्षी नभ में स्वतंत्र देखे

देखा अजीब था नजारा, आसमां लगता था प्यारा,
पक्षी स्वतंत्र नभ में देखे, झुंड में विचरण थे करते।

ऊपर से नीचे तक जाते, नीचे से ऊपर तक जाते,
दांये से बांयें, बांयें से दायें, गोल गोल चकरी बनाएं।

आगे पीछे वे चलते जाएं, आपस में छू भी ना पाए,
जहाज का चित्र बनाएं, रेल भांति उड़ते वे जाएं।

कलरव मधुर राग सुनाएं, चहक-चहक चकहकाएं,
प्रेम रसीले के गीत सुनाएं, मंद-मंद मधुर मुस्कराएं।

खुशियों से भरे गीत गाएं, एकता का भी पाठ पढाएं,
किसी से भी नही घबराएं, दुख सुख में काम वे आएं।

झुंड में खग लगते सुन्दर, ऊपर नभ, नीचे समुन्दर,
अद्भुत था मनोरम दृश्य, विहंगम का मधुरिम नृत्य।

मनभावन नभचर कृत्य, मन में जिंदा है परिदृश्य,
सुखविंद्र मन है प्रफुल्लित, खेचर दल देख कर हर्षित।

परवाना रूठ गया

हम से तो लगे सारा जमाना रूठ गया
जो था सबसे प्यारा मस्ताना रूठ गया

रहगुजर का साथी आस्तीन का सांप
छोड़ तन्हाई में तन्हा दीवाना रूठ गया

खुद से ज्यादा चाहा वो बेवफा निकला
शमां जलती छोड़के परवाना रूठ गया

वो खुश इस कदर जैसे कुछ नहीं हुआ
तन मन लूट कर वो लूटेरा है रूठ गया

अकेलापन एकांत में नाग सा है डसता
मन में जहर फैला जहरीला रूठ गया

मंजिल मिल नहीं पाई रास्ते हैं छूट गए
राह में अकेला छोड़ राहगीर रूठ गया

खेल खिलाए प्रेम के जीवन में बेइंतहा
खेल कर जिन्दगी से मदारी रूठ गया

सुपने दिखाए संग जीने के साथ साथ
स्वप्न हसीन दिखा स्वप्नकारी रूठ गया

रंग बिरंगी दुनिया रंगों में सदा हरी भरी
रंग फीका जिंदगी का रंगीला रूठ गया

सुखविंद्र जिन्दगी में है तमाशा बन गया
तमाशा बना कर तमाशबीन रूठ गया!

बदली जीवन रेखा है

जब से तुम्हें देखा है, बदली जीवन रेखा है।

फिरते थे मारे-मारे, मायूस थे बिन तुम्हारे
हसीन ख्वाब देखा है, बदली जीवन रेखा है।

राह थी जीने की सूनी, खुद से थी कहासूनी
राह में तुमको देखा है, बदली जीवन रेखा है।

रातों को थे सुपने देखे, खूब लगते तेरे भुलेखे
सचमुच तुम्हें देखा है, बदली जीवन रेखा है।

मेघों की गर्जन हुई है, कली फूल बन गई है
मयख्यारी से देखा है, बदली जीवन रेखा है।

तुम रानी मैं तेरा राजा, बजाएंगे जीवन बाजा
प्रेम में मचलते देखा है, बदली जीवन रेखा है।

झोली खुशियों से भरी, तुम बनी मेरी हूर परी
सुखविंद्र की तुम रेखा, बदली जीवन रेखा है।

क्यों रोता है क्षण-क्षण

पल पल हर पल क्षण-क्षण
दिल रहे अशान्त क्षण-क्षण

शालीनता का वास है नहीं
रहने लगा उदास क्षण-क्षण

संतुष्ट स्तर नित्य है बढ़ रहा
दिखे असंतुष्ट सा क्षण-क्षण

प्रेम भाषा को समझता नहीं
नफरतों में जीता क्षण-क्षण

जीवन की डगर काँटो भरी
खाता है ठोकरें क्षण-क्षण

प्रतिरोध ज्वाला में जल रहा
सहता है आघात क्षण-क्षण

अपनों से जख्म बहुत खाए
गैरों ने संभाला है क्षण-क्षण

सुखविंद्र जीवन अनमोल है
फिर क्यों रोता है क्षण-क्षण।

आँखें भर आई है

आज दिल में तन्हाई छाई है
लगता अपनों की रुसवाई है

अपना जाए दिल दुखता है
दुखदायी आज घड़ी आई है

अकेलापन सदा लोचता है
डराती अपनी ही परछाई है

दिल टूटे तो आँखें रोती हैं
आँखों के आँसू ही मोती हैं

अपनों बिना यहाँ अकेले हैं
तभी मेरी आँखें भर आई हैं

प्रेम बिना जीवन अधूरा है
अनुरागी बनो, यही दुहाई है

प्रेम हर जंग जीत जाता है
सुखविंद्र तो प्रेम पुजारी है!

कोरोना मुक्ति मंत्र

लॉकडाऊन अभियान को सफल बनाओ
कोरोना उन्मूलन तुम उपहारस्वरूप पाओ

लॉकडाऊन की अगर धज्जियाँ उड़ाओगे
निज को आइसोलेशन वार्ड में तुम पाओगे

कोरोना वायरस की रक्त जाँच हो जाएगी
तुम्हारी रक्त जाँच सकरात्मक हो जाएगी

अगर कोरोना सकारात्मक तुम हो जाओगे
घर- परिवार परित्याग अस्पतपाल जाओगे

घरवालों की संभाल नहीं तुम्हें मिल पाएगी
अपने और पराये की नजर ना मिल पाएगी

निजात मिलेगी तो तुम घर वापिस आओगे
अन्यथा अंतिम संस्कार क्रिया वहीं पाओगे

मृत्यु की सूचना घरवालों को मिल जाएगी
अन्तिम रस्म क्रिया नसीब नहीं हो पाएगी

हर हालत-हालात में तुम्हें घर पर रहना हैं
कोरोना महामारी से हमें मुक्त हो जाना है

सुखविंद्र कवि कहे कोरोना ये मुक्ति मंत्र है
लॉकडाऊन और सॉशल दूरी ही तंत्र मंत्र है!

कोरोना आया भारत में हैरान हो गया

कोरोना आया भारत में हैरान हो गया
देख रंग-ढंग भारतीय परेशान हो गया

यहाँ पर धार्मिक, जातीय सीमाएं बहूत हैं
हिन्दू-मुश्लिम विवाद का शिकार हो गया

राजनीतिक विचारधारा की यहाँ जंग है
गन्दी राजनीति का यहाँ शिकार हो गया

यहाँ के लोग तमाशबीन खुले आम घूमते
लोगों की बेपरवाही का शिकार हो गया

देख दृश्य सार्वजनिक स्थल का चिंतनीय
लॉकडाऊन, निषेधाज्ञा असर फैल हो गया

विश्वभर मे मौत कहर का है डंका बजाया
यहाँ लापरवाही, कुंठा का शिकार हो गया

धर्म के नाम पर जगह जगह हूजुम हो रहे
धार्मिक आस्था में जी का जंजाल हो गया

अगर अनियंत्रित हो गया तो विनाश होगा
समय है संभल जाओ हूक्म निषेध हो गया

सुखविंद्र बार बार है सर्वजन को चेता रहा
अगर नहीं समझोगे तो बुरा हाल हो गया!

कोरोना जागरूकता अभियान

अस्त्र-शस्त्र नहीं हमें उठाने हैं
जंग जीतनी बचाने घराने हैं
खुद की खुद से यह जंग है
घर में हमें रहना नजरबंद है
चौकीदार की करबद्ध अरदास है
जनसुरक्षा चाबी तुम्हारे पास हैं
गर कोरोना को हराना हैं
घर से बाहर नहीं आना है
दृढ़ संकल्पित हो जाना है
कोरोना जड़ से मिटाना है
महामारी रूपी समस्या है
कुछ दिन की ही तपस्या है
करना बस अब ये काम है
घर में बैठ करना आराम है
तमाशबीन नहीं हमें बनना हैं
एकांत में रहकर ही लड़ना है
भीड़ से हमें अभी बचना है
कोरोना विरुद्ध यही रचना है
अफवाहें नहीं फैलानी हैं
जन जागरूकता जगानी हैं
संक्रमित जानलेवा सुनामी है
जन संपर्क दूरियां बनानी हैं
कोरोना वायरस का कहर है
जोखिम भरा जहरीला जहर है
सरकारी हरदम हमारे साथ है
देना सहयोग सोहार्द साथ है
ये तो जागरूकता अभियान है
परहेज, ठहराव ही निदान है
सुखविंद्र कुछ दिन की बात हैं
फिर से वही हमारे दिन रात हैं

कोरोना वायरस का कहर

कोरोना वायरस का कहर देखिए, चारों ओर फैला है, हाहाकार देखिए!

खुशी-खुशी खूब हम गले लगते थे
हाथ मिला कर हाल चाल पूछते थे
लग रहा है अब दूर से सलाम देखिए
चारों ओर फैला है, हाहाकार देखिए
अब से पहले विदेशों में थे खूब चर्चे
अब तो देश भर में भी बंट रहें पर्चे
विश्व भर में फैल रहा फैलाव देखिए
चारों ओर फैला है, हाहाकार देखिए

विश्व में ये कोरोना महामारी बन गया
कोरोना अनसुलझी बीमारी बन गया
बन गया है ये जी का जंजाल देखिए
चारों ओर फैला है, हाहाकार देखिए
लोगो के गले की यह फांस बन गया
पत्र-पत्रिकाएं, अखबारों में बस गया
बंद हो रहे कार्यालय, बाजार देखिए
चारों ओर फैला है, हाहाकार देखिए

दिलोदिमाग में यह आतंक छा गया
बच्चा-बच्चा कोरोना से घबरा गया
कोरोना के होने का धमाल देखिए
चारों ओर फैला है, हाहाकार देखिए
सुखविंद्र तुम डरो ना,मत ना डराओ
कोरोना बीमारी से तुम मत घबराओ
बीमारी का सामना तुम करके देखिए
चारो ओर फैला है, हाहाकार देखिए

कोरोना वायरस का कमाल देखिए, चारों ओर फैला है, हाहाकार देखिए!

खुदा की नियामत है

आप मेरे पास हो, खुदा की इनायत है
तुम जो मिल गए हो, गिला ना शिकायत है!

तेरे बिना मैं नहीं
मेरे बिना तुम नहीं
मैं तुम हमसफर बने
कुदरत की रहमत है

हमसाया हमराज हो
जिन्दगी की लाज हो
शुक्रिया कैसे करूँ
जिन्दगी जमानत है

शिकवा रहा न कोई
शिकायत नहीं कोई
जिन्दगी रंगीन हूई
खुदा की नियामत है

प्रेम बिन सृष्टि नहीं
नजर बिन दृष्टि नहीं
खुदा का रहमोकरम
अनुराग रिवायत है

आओ साथ संग चले, बहती हवा संग चलें,
जल धारा साथ बहें, सुखविन्द्र अमानत है!

याद मेरी उसको आती तो होगी

याद मेरी उसको आती तो होगी
रात में उठाकर जगाती तो होगी

यादों का झौंका नोचता तो होगा
रगों में खून उसके खोलता होगा
बाहों में तकिया वो बोचती होगी। याद मेरी.....!

प्रेम-सौगातें, प्यारी-प्यारी बातें
दिन और रातें वो हसीन मुलाकातें
बाहों में मुझे पलोसती तो होगी। याद मेरी.....!

आँखें बन्द कर मुझे सोचती होगी
ख्वाब में मुझे वो ढूँढती तो होगी
मेरे माथे को चूमती तो होगी। याद मेरी.....!

संग संग बीताए वो हसीन नजारे
चोरी चोरी चुपके किए वो इशारें
शीत सी हवाएँ चीरती तो होगी। याद मेरी.....!

रूठना मनाना और गले से लगाना
हाथों में ले हाथ संग चलते जाना
राहों में पलकें बिछाती तो होगी। याद मेरी.....!

याद मेरी उसको आती तो होगी
रात को उठाकर जगाती तो होगी!

नारी मान सम्मान की भूखी

नारी स्वरूप है बहूत प्यारा,
नदियों में जैसे बहती धारा।

जल सी शीत, शान्त, शालीन, चंदा सी ही मूर्त सुंदर हसीन,
मृदुल, मधुर स्वभाव निराला, गगन में चमकता जैसे तारा,
सहनशीलता की मूर्त प्यारी, धैर्यशील दुख में होती सारी,
घर बाहर सर्वकृत निपटाती, नारी धैर्यशाली नहीं घबराती।

नारी बलिदानी, स्वाभिमानी, घर परिवार की है महारानी,
औरत बिन ना होता गुजारा, नारी बिना नर होता बेचारा,
नर नारी सुख दुख के साथी, बहू ब्याह लाते हैं बन बाराती,
नारी की आज भी ये कहानी, आँचल में दूध आँखों में पानी।

मौन गौण हो कर सब सहती, किसी को कुछ नही है कहती,
निज दुखड़ा कभी नहीं सुनाती, खुशी से सब कुछ है सह जाती,
सजती संवरती ला बिंदी सुर्खी, नारी है मान सम्मान की भूखी,
बच्चे की होतीं है प्रथम शिक्षक ,पीसती रहती है ना कोई रक्षक
माँ,बेटी,बन,भार्या ये सारे नाते, खुशी खुशी निभाएं रिश्ते नाते

सुखविन्द्र नहीं कोई क्षैत्र अछूता,
नारी ने गाड़ा दिया झंडा कसूता।

भाईचारा

भाई भाई बीच होता था भाईचारा
भाई भाई बीच बंट गया भाईचारा
भाई भाई पे देता था जो जान वार
आज आतुर है जान लेने भाईचारा

टोटे में जो बाँटते रोटी का निवाला
छीनते हैं द्वेषी बन रोटी का निवाला
खेलकूद में साथ साथ पले,पढ़े बढ़े
प्रीत में बंटन से हो गया है बंटवारा

भाईचारे बिना संपन्न ना होता कार्य
नूतन की भेंट चढ़ा हमारा भाईचारा
मंहगाई की मार मर गया भाईचारा
साक्षरता में सत्यानाश हैं भाईचारा

संयुक्त परिवारों में जिंदा भाईचारा
एकल परिवार में एकांत भाईचारा
पूर्वजों से हस्तांतरित था भाईचारा
सुखविंद्र न गुजारा बिना भाईचारा!

घर-घर में अब विभीषण सारे

मर्यादा पुरुषोत्तम राम जग से लोप हो गए
घर घर में अब विभीषण सारे लोग हो गए

राजा दशरथ जैसे पिता जग में रहे कहाँ
राम लक्ष्मण जैसे पुत्ररत्न अब लोप हो रहे

घर घर में कैकेयी मंथरा जैसे चरित्र हैं यहाँ
अब पत्नी वचन पति के लिए ठोस हो गए

चारों वेदों का ज्ञानी रावण था स्त्री सत्कारी
कलयुगी रावण स्त्रियों के लिए मौत हो गए

भरत शत्रुघन जैसे आज्ञाकारी भाई रहे नहीं
भाई भाई के भाईचारे के संबंध लोप हो रहे

सीता जैसी प्रेम, समर्पण, सतीत्व, आर्यता नहीं
पति-पत्नी के भी संबंध में भी विरोध हो रहे

शांति, संतुष्टि, संस्कार हेतु रामायण विसारिए
सुखविंद्र संस्कारी चरित्र जग से लोप हो रहे।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

सुखविंद्र सिंह मनसीरत

मकान नं.-२८४
हाऊसिंग बॉर्ड कॉलोनी, जीन्द रोड़
मॉडल टाऊन, कैथल-१३६०२७
हरियाणा

Email- sukhamal77@gmail.com

Mobile - 9896872258

जैसा कि आपातकाल शब्द में छिपा हुआ है कि आपातकाल काल का समय कष्टदायक और असहनीय और तनावग्रस्त होता है और जिससे मानसिक, शारीरक और आर्थिक क्रियाओं, गतिविधियों और क्रियाकलापों में भी ठहराव पैदा हो जाता है। आपातकाल में यदि कोई जिंदा अथवा गतिमान रहता है तो वह है सृजन जो कि सदैव मानव मन मस्तिष्क के अंदर चलायमान रहता है और यही उसकी सृजनशीलता उसे आपातकाल की विषम परिस्थितियों में गतिशील रखती है। किसी भी प्रकार किसी भी विषय में सृजनात्मकता समय का सदुपयोग कर व्यक्ति विशेष को पथ पर अग्रसर होने के लिए मार्गदर्शन और सही दिशा प्रदान करती है।

आज भी विश्व भर में कोरोना महामारी संक्रमण के कारण हर जगत आपातकाल जैसा माहोल है और सर्वजन इस भय की स्थिति में अपने घर रूपी कारावास में कैद हैं। इस अवस्था पर सृजनात्मकता शक्ति का विशेष महत्व है जो कि मानव को विषम परिस्थितियों में नीरसता के स्थान पर व्यस्त रखती है। लेखन कार्य में सृजन कार्य का बहुत महत्व है जो सम्पूर्ण समाज में जागरूकता पैदा करती है, जो मनोरंजक के साथ साथ तत्कालीन परिस्थितियों का बोध करवाते हुए उनका सामना करने की शक्ति और तौर-तरीकों का बोध करवाती है जो कि आपातकाल में बहुत लाभदायक सिद्ध होती है।

आज इन आपातकाल की स्थिति में अन्तरा शब्द शक्ति एक बहुत ही अच्छा नव प्रयास कर रही हैं, जो कि सृजनात्मकता में साहित्यिक क्षेत्र में सांझा काव्य संग्रह कृति के के रूप में रचनाकारों को एक साहित्यिक मंच प्रदान करते हुए विश्व, देश और समाज को सही दिशा, मार्गदर्शन और मनोरंजन प्रदान कर रही है और अन्तरा शब्द शक्ति द्वारा किया गया यह अविश्वसनीय नव प्रयास बहुत सराहनीय, लाभदायक और नवचेतना प्रदान करने वाला है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-163-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/